

मानवीय मूल्यों के आत्मसात से ही पैदा होगा आत्मविश्वास

— राज्यपाल

जयपुर, 09 जुलाई। राजस्थान के राज्य विश्वविद्यालयों के कुलाधिपति एवं राज्यपाल श्री कलराज मिश्र ने कहा है कि युवा देश के विकास का केन्द्र बिन्दु है। युवा पीढ़ी को राष्ट्र के विकास के लिए तैयार करना है। इसके लिए युवाओं को मानवीय मूल्यों की शिक्षा देना आवश्यक है। उन्होंने कहा कि मानवीय मूल्यों के आत्मसात से ही व्यक्ति में आत्मविश्वास पैदा होता है। श्री मिश्र का मानना था कि आत्मविश्वासी ही कोरोना जैसी महामारी को मात दे सकता है। शिक्षा ने यदि किसी व्यक्ति के आत्मविश्वास को जगा दिया तो उस व्यक्ति को जीवन में हर कदम पर विजय हासिल होगी।

राज्यपाल श्री मिश्र गुरुवार को यहां राजभवन में वीडियो कान्फ्रेंस के माध्यम से कार्यशाला को सम्बोधित कर रहे थे। तकनीकी शिक्षा में मानवीय मूल्यों का समावेश विषयक कार्यशाला का आयोजन बीकानेर तकनीकी विश्वविद्यालय द्वारा किया गया। राज्यपाल ने कहा कि मानवीय मूल्य व्यापक होते हैं। इनमें संवेदनशीलता, सदाचारण, सकारात्मक व्यवहार व सोच जैसे गुण समाहित होते हैं। श्री मिश्र ने कहा कि इन्हीं गुणों के कारण व्यक्ति अवसाद और निराशा जैसी स्थितियों से बचा रहेगा। राज्यपाल ने कहा कि युवा पीढ़ी को विकास के लिए प्रेरित करना होगा। उन्होंने कहा कि युवा की रचनात्मक मानसिकता को भी विकसित करना होगा ताकि युवा पीढ़ी देश के विकास में सक्रिय भागीदारी निभा सके।

राज्यपाल ने कहा कि मनुष्य के जीवन में प्रत्यक्ष रूप से आत्मसात करने वाले गुण ही मानवीय मूल्य होते हैं। मानवीय मूल्यों से पाप और पुण्य का विश्लेषण करने का ज्ञान भी व्यक्ति में पैदा होता है। जीवन में स्वयं पर अनुशासन भी व्यक्ति मानवीय गुणों से ही कर सकता है। ऐसे गुण वाले व्यक्ति हर क्षेत्र में निरन्तर आगे बढ़ते हैं।

श्री मिश्र ने कहा कि हमें मशीन बनकर नहीं रहना है। हमें मानव बनना है। आज के युवा और देश के भविष्य को भी मानवता के गुण सीखाने हैं। इसके लिए लोगों में संवेदना पैदा करनी है। उन्होंने कहा कि हमें ऐसी संवेदना समाज में विकसित करनी होगी, जिससे की सभी लोग आपस में जुड़े रह सके। राज्यपाल ने कहा कि भारतीय मूल्य संस्कारमय व त्याग पर आधारित है। समाज के लिए आवश्यक है कि वसुधैव कुटुम्बकम की भावना का वातावरण बनाया जाये। उन्होंने कहा कि संस्कार का प्राथमिक स्थल परिवार है और उसके बाद विद्यालय से संस्कार मिलते हैं। राज्यपाल ने कहा कि शिक्षा संस्थानों का स्वरूप संस्कारमय होना चाहिए ताकि युवा पीढ़ी का सर्वांगीण विकास हो सके। उन्होंने कहा कि शिक्षा संस्थान ही लोगों में प्रतिभा जाग्रत करने के स्रोत होते हैं।

कार्यशाला में ए आई सी टी ई के अध्यक्ष प्रो० अनिल सहरत्रबुद्धे ने कहा कि मानवीय मूल्यों में जीवन की समस्याओं के समाधान के मार्ग हैं। उन्होंने कहा कि आत्म निर्भर राष्ट्र का रास्ता गांव से ही आरम्भ होता है। बीकानेर तकनीकी विश्वविद्यालय के कुलपति श्री एच. डी चारण ने कार्यशाला की जानकारी दी। कार्यशाला का संचालन डॉ० अलका स्वामी ने किया। इस अवसर पर राज्यपाल के सचिव श्री सुबीर कुमार और प्रमुख विशेषाधिकारी श्री गोविन्द राम जायसवाल भी मौजूद थे।

—
डॉ. लोकेश चन्द्र शर्मा,
सहायक निदेशक, जनसम्पर्क,
राज्यपाल, राजस्थान
98292 71189